प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा महत्व एवं चुनौतियाँ

अविनाश कुमार*
रोशनी यादव**
गोपाल सिंह***

इस शोध का उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) से संबंधित चुनौतियों एवं महत्व का अन्वेषण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी.) के संदर्भ में करना है, जिसमें पूर्व में बनी शिक्षा नीतियों की समीक्षा, पाठ्यक्रम तथा शिक्षणशास्त्र में परिवर्तन के आधार को भी ध्यान में रखा गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था बच्चों के मानसिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय अवधि है जिसमें भाषा, गत्यात्मक कौशल, मनोसामाजिक, संज्ञानात्मक और सीखने की क्षमता का विकास शामिल है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा बच्चों के शारीरिक विकास, मनोसामाजिक भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता विकास, सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास से संबंधित विकास (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) के आलावा सीखने की सकारात्मक आदत विकसित करने का उद्देश्य है। शोधपत्र प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति का महत्व तथा इसे लागू करने में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के तहत ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम की संरचना 2013 में तैयार की गई जिसके अनुसार 0–6 वर्ष के बालकों की पूर्ण विकास की योजना तैयार की गई। इस नीति के अनुसार ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम के प्रतिदिन 3–4 घंटे की अवधि होना अनिवार्य किया गया। इस कार्य को 2 वर्गों में विभाजित किया गया 0–3 वर्ष एवं 3–6 वर्ष, 0–3 वर्ष के अंतर्गत माता-पिता को बच्चे के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सजग रखा जाएगा एवं 3–6 वर्ष पर बच्चे बालवाटिका या आँगनबाड़ी के सक्रिय सदस्य बन जाएँगे जिसके स्वास्थ्य एवं शिक्षा का दायित्व शिक्षक एवं अभिभावकों का रहेगा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)। ई.सी.सी.ई. के अंतर्गत मुख्य तौर पर यह कहा गया, कि जो भी बच्चे 5–6 वर्ष की आयु में पहली कक्षा में प्रवेश लेंगे वे ई.सी.सी.ई. का भाग रहे हों, इसको

शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश 208 024
**छात्रा (एम.एड.), शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश 208 024
***सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश 208 024

सुनिश्चित करने का लक्ष्य सरकार ने वर्ष 2030 तक रखा है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)। ई.सी.सी.ई. के अंतर्गत बच्चों को अच्छा व्यवहार, नैतिकता, सांस्कृतिक समझ विकसित करने एवं स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति समझदार और जागरूक बनाने के उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं।

विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय को पाठ्यक्रम के अंतर्गत ऐसे परिवर्तन एवं नए तथ्यों को संकलित करना चाहिए, जिसके द्वारा विद्यार्थियों में रचनात्मकता को बढ़ाया जा सके। इसके अनुसार पाठ्यक्रम को लचीला, बहुआयामी होना चाहिए और इसमें बुनियादी साक्षरता संख्यात्मक, खेल आधारित, चित्रकला, ड्रामा, कठपुतली, संगीत, लोकगीत, नाटक आदि गतिविधियों को शामिल किया जाना चाहिए।

बच्चों में रचनात्मकता को बढ़ावा देने को प्रोत्साहित किया गया है तथा पूछताछ आधारित शिक्षा का समर्थन किया है, साथ ही बच्चों में पढ़ाई में रुचि जागृत करने के लिए आधारभूत संरचना में खिलौने और बच्चों के अनुकूल कक्षा को डिजाइन करने का प्रस्ताव रखा गया है। बच्चों की शिक्षा के लिए आँगनबाड़ी की स्थापना एकल या प्राथमिक विद्यालयों के साथ संयुक्त रूप से हो सकती है। आँगनबाड़ी की स्थापना के पीछे का लक्ष्य यह है कि जब बच्चे प्रथम कक्षा में विद्यालय प्रवेश करें तो उसे सुगमता का अनुभव हो। वह कक्षा के वातावरण में व्यवस्थित होने में संकोच ना करें।

बालवाटिका या आँगनबाड़ी के शिक्षक को कैसे तैयार किया जाए, इस प्रश्न के समाधान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा एक रूपरेखा तैयार की गई। जिसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर के नाम से जाना गया। अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए डिजिटल प्रशिक्षण का प्रस्ताव दिया गया।

ई.सी.सी.ई. के अंतर्गत ही सरकार ने आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में बालवाटिका के स्थान पर आश्रम शालाओं की स्थापना का सुझाव दिया जिनकी कार्यप्रणाली बालवाटिका की तरह ही होगी। इनके कार्यान्वयन में शिक्षा मंत्रालय, महिला व बाल विकास मंत्रालय और जनजातीय मामलों का मंत्रालय, मदद एवं निगरानी का कार्य करेंगे (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

राव, एन. और के. क्लाउडी (2023). ने *ग्लोबल ट्रैकिंग ऑफ एक्सेस और क्वालिटी इन अर्ली चाइल्डहुड केयर और एजुकेशन* पर शोध कर प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल शिक्षा का बच्चों के प्रारंभिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पाया।

मस्जिद, ए., जे. किनकेयड और सी.बी. सरौन (2022) नें *अंडरस्टैंडिंग कैरीबियन अर्ली चाइल्डहुड टीचर्स प्रोफेशनल एक्सपीरियंस ड्यूरिंग द कोविड-19 स्कूल डिस्क्रिप्शन* पर शोध कर पाया कि अध्यापक, प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं देखभाल कार्यक्रम में अहम भूमिका का निर्वाहन करते हैं।

अचूमि, एम. और एस. जोसफ (2022) ने *इंटरफेस बिटवीन न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 और अर्ली चाइल्डहुड केयर और एजुकेशन* पर शोध कर

पाया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का प्रस्ताव रख बच्चों के बुनियादी जीवन को प्रगति के मार्ग पर प्रस्तुत किया व उनके जीवन में सकारात्मक परिणाम आने का अवसर दिया।

मर्फी, आर. (2015) ने *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इन आयरलैंड— चेंज और चैलेंज* पर शोध कर पाया कि शुरुआती वर्षों में ही सीखने की नींव रखी जाती है जिसमें कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है जिसका बच्चों के जीवन पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य

1. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा का अध्ययन
2. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के क्रियान्वयन से संबंधित चुनौतियों का अध्ययन

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

कुछ वर्ष पूर्व राष्ट्रीय बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा नीति 2013 में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने की परिकल्पना की गई थी। इसमें 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों को न्यायसंगत और प्रासंगिक अवसर प्रदान करने एवं सभी बच्चों के उत्तम विकास और सक्रिय सीखने की क्षमता को बढ़ावा देने के लिए प्रावधान किए गए थे। यह नीति बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा के संदर्भ में विकास को सुनिश्चित करने के साथ-साथ एक ठोस आधार प्रदान करने की दिशा में रास्ता तय करती है। राष्ट्रीय बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा नीति 2013 का उद्देश्य था कि प्रत्येक बच्चे के लिए देखभाल और प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान देने के साथ विकास, समान हिस्सेदारी और समावेश के साथ सार्वभौमिक पहुँच को बढ़ावा दिया जाए। ई.सी.सी.ई. में गुणवत्ता और क्षमता को मजबूत करना, निगरानी और पर्यवेक्षण करना, अनुसंधान को बढ़ावा देना, इत्यादि भी प्रमुख उद्देश्यों में से है। इस नीति के एक बड़े भाग का अभी भी ज़मीनी स्तर पर उतरना बाकी है, इसके लिए आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है। ई.सी.सी.ई. के लिए एक प्रमुख सार्वज़निक पहल इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस (आई.सी.डी.एस.) द्वारा की जा रही है जिसका उद्देश्य है प्री-स्कूल शिक्षा प्रदान करने में आने वाली चुनौतियों को समझाना और उन्हें दूर करने के लिए प्रयास करना है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का महत्व

प्रारंभिक बाल्यावस्था बच्चों के मानसिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय अवधि है जिसमें शारीरिक विकास, सामाजिक भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता विकास, सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास शामिल हैं। बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास को आंतरिक कारकों के साथ-साथ बहिर्जात कारक भी बड़े स्तर पर प्रभावित करते हैं, जैसे कि शैक्षिक वातावरण, जिसमें बच्चे जीवन के पहले 6–8 वर्षों के दौरान जिन लोगों से, वस्तुओं से और वातावरण से सक्रिया करते हैं। कई अध्ययनों से पता चला है कि अच्छी गुणात्मक बाल्यावस्था की देखभाल एवं बच्चों में स्कूल रेडीनेस को बढ़ाने में सक्रिय

भूमिका निभाती है और उन्हें अच्छी उच्च शिक्षा हेतु जागरूक करने एवं भविष्य में बेहतर आर्थिक और सामाजिक लाभ लेने योग्य बनाती है (पल्लाथाड़का एच. और अन्य, 2021)। जेम्स हेकमैन जो शिकागो विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता हैं उन्होंने प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) साहित्य की समीक्षा की और पाया कि उच्च गुणवत्ता की ई.सी.सी.ई. में निवेश भविष्य में दीर्घकालिक, आर्थिक प्रतिफल प्राप्त कराने में सहायक है, गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. बच्चों में मुख्य रूप से तीन गुणों, सामाजिक कौशल, प्रेरणा (मोटिवेशन) और शिक्षा को विकसित करने में मदद करती है जो भविष्य में कुशल व्यक्ति के रूप में विकसित करती है जिससे व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर एक महत्वपूर्ण और मूल्यवान व्यक्ति के रूप में कार्य करने में सक्षम होता है (रैकेश, ए., और अन्य, 2023)। बालक के जीवन के प्रारंभिक 6 वर्ष महत्वपूर्ण माने जाते हैं, परंतु वर्तमान समय में सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है जिसको ध्यान में रखते हुए इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई इसके महत्व का वर्णन निम्न बिंदु करते हैं—

1. ई.सी.सी.ई. बच्चों में क्षमता विकसित करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।
2. बच्चों का शारीरिक विकास, सामाजिक भावनात्मक और नैतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषा और साक्षरता विकास, सौंदर्य बोध और सांस्कृतिक विकास करना।
3. ई.सी.सी.ई. सभी पर समान रूप से, पिछड़ों पर विशेष क्षेत्रों पर ध्यान देना जो आर्थिक सामाजिक रूप से पिछड़े हैं। इन सब के लिए पहले से विस्तृत रूप से चल रहे आँगनबाड़ी, प्राथमिक विद्यालय के साथ चल रहे आँगनबाड़ी, पूर्व प्राथमिक विद्यालय जो प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित है, स्वतंत्र रूप से चल रहे प्री-स्कूल, इसके लिए शिक्षण में प्रशिक्षित कर्मचारियों व शिक्षकों की भर्ती की जाएगी (देवी, के. और आर. स्कॉलर 2022)।
4. 5 वर्ष की आयु से पहले बालक बालवाटिका (कक्षा 1 से पहले) में स्थानांतरित हो सकेंगे (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।
5. क्लस्टर रिसोर्स सेंटर द्वारा विभिन्न माध्यमों (डी.टी.एच. चैनल, ऑनलाइन क्लासेस, दूरस्थ माध्यम) से आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों को प्रारंभिक साक्षरता संख्या और ई.सी.सी.ई. के अन्य प्रासांगिक पहलुओं से अवगत कराया जाएगा।
6. ई.सी.सी.ई. योजना का क्रियान्वयन शिक्षा मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय स्वास्थ्य एंव परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से कराया जाएगा, क्योंकि शिक्षा के क्रियान्वयन के लिए शिक्षा मंत्रालय, ई.सी.सी.ई. के अंतर्गत 0–6 वर्ष तक के बच्चे आते हैं। उनके पोषण के लिए महिला और बाल विकास स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ज़िम्मेदार हैं।

7. *द डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग* पर बुनियादी साक्षरता संख्या ज्ञान पर उच्चतर गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय भंडार उपलब्ध कराया जाएगा।
8. 2030 तक प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक में 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात का लक्ष्य रखा गया है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।
9. विद्यालयों में पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और अधिगम सामग्री एकीकृत, आनंददाई और रुचिकर होनी चाहिए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की चुनौतियाँ

इतने बड़े देश में 0–6 वर्ष के बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था और देखभाल शिक्षा देना स्वयं में चुनौतीपूर्ण है, इसके उपरांत भी 0–6 वर्ष के सभी बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित किया गया है। इसके लिए विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों का संगठन समय-समय पर किया जाता रहा है जिनमें से ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम प्रबल भूमिका निभा रहा है (अब्दुल-माजिद, एस. और अन्य, 2022)। जिस प्रकार विभिन्न नीतियों के संचालन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उसी प्रकार की ई.सी.सी.ई. के कार्यक्रम में भी कई प्रकार की चुनौतियों का सामना किया जा रहा है। ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियाँ निम्न हैं—

ई.सी.सी.ई. कार्यक्रम में चुनौती के रूप मे प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

असर-2018 ने अपनी रिपोर्ट में माना है कि भारत में प्राथमिक स्तर पर कुशल शिक्षकों की भारी कमी है। प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी एक मुख्य चुनौती के रूप में है, क्योंकि यह बालकों के विकास का बुनियादी (0–6 वर्ष) समय है, जो बच्चों को भविष्य में किसी क्षेत्र में बेहतर करने के लिए आधार की तरह कार्य करते हैं, इसलिए हमें प्रशिक्षित शिक्षक चाहिए जो वर्तमान की आवश्यकताओं के अनुरूप बच्चों को शिक्षित कर सकें और उनमें सृजनात्मकता का विकास कर सकें।

अभिभावकों में ई.सी.सी.ई. के प्रति संवेदनशीलता का अभाव

भारत एक विविधता से भरा और विशाल जनसंख्या वाला देश है ऐसे में एक बड़ी आबादी ऐसी है जो समाज के निचले तबके, वंचित समूहों या हाशिए के समूहों से संबंध रखती है। इनके लिए दो वक्त की रोटी का जुगाड़ कर पाना ही एक बड़ी चुनौती होता है, ऐसे में इन समूहों के बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा से संबंधित मुद्दे कही पीछे छूट जाते हैं।

प्री-स्कूल (नर्सरी) शिक्षा पर लंबे समय ध्यान न दिया जाना

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा 6 –14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान तो किया गया, लेकिन क्या ये बच्चे औपचारिक शिक्षा लेने के लिए तैयार हैं। इस बात पर काफ़ी समय तक ध्यान नहीं दिया गया जिस कारण प्राथमिक स्तर की शिक्षा में गुणवत्ता को लेकर आज भी एक बड़ा प्रश्न चिह्न है।

ई.सी.सी.ई. के लिए लंबे समय तक अलग से पाठ्यचर्या रूपरेखा का अभाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पहले ई. सी.सी.ई. के लिए अलग से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा बनाने की ज़रूरत को नहीं समझा गया था जब कि प्राथमिक स्तर के लिए बने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में ही इसे शामिल किया गया था जिस कारण कही ना कही भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ई.सी.सी.ई. को स्थान नहीं मिल पाया जो काफ़ी वर्ष पूर्व मिल जाना चाहिए था।

ई.सी.सी.ई. के लिए वित्तीय अनुदान की कमी

भारत में बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे हैं जो पोषण और प्रारंभिक शिक्षा की कमी से जूझ रहे हैं। सरकारों और सार्वजानिक क्षेत्रों की निजी संस्थाओं द्वारा कई प्रयास किए गए हैं, पर ये काफ़ी नहीं हैं। इसलिए प्रत्येक बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण ई.सी.सी.ई. पहुँचाने के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता का प्रबंध ना हो पाना भी एक बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा देश के विभिन्न क्षेत्रों और प्रांतों के छोटे बच्चों (0–6 वर्ष) के लिए संदर्भित है। ई.सी.सी.ई. 3–6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए समूह को संदर्भित करता है जो उनके बौद्धिक विकास का समर्थन और प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। ई.सी.सी.ई. को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, सौंदर्य और आध्यात्मिक आयाम सहित छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से लक्ष्य, दृष्टिकोण और प्रथाओं के एक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ई.सी.सी.ई. में देखभाल और शिक्षा दोनों शामिल हैं। वर्तमान अध्ययन में ई.सी.सी.ई. की प्रभावशीलता, बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता, स्थान, केंद्रों के समुचित कर्मचारियों का आहरित वेतन, शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम, बच्चों के नामांकन के क्षेत्र में देखी गई है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का निर्माण सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए किया गया है जिसका प्रभाव बच्चों की शिक्षा पद्धति पर देखा जाएगा तथा हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास किया जाएगा। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुसार बुनियादी साक्षरता संख्या, विज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता दिया जाएगा और बच्चों की क्षमता अनुसार पाठ्यक्रम को लचीला बनाया जाएगा। सभी शैक्षिक निर्णय की आधारशिला के रूप में पूर्ण क्षमता और समावेशन को ध्यान में रखा जाएगा। इसका मतलब है प्रारंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान के क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों का निरंतर व्यावसायिक विकास किया जाना चाहिए। हमारे सभी बच्चों कों उच्च गुणवत्ता वाली प्रारंभिक शिक्षा और देखभाल मिले इसके लिए हमें निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए।

संदर्भ

अब्दुल-माजिद, एस., जेड. किनकेयड-क्लार्क और एस.सी. बर्न्स. 2022. अंडरस्टैंडिंग कैरीबियन अर्ली चाइल्डहुड टीचर्स प्रोफेशनल एक्सपीरियंस ड्यूरिंग द कोविड-19 स्कूल डिस्क्रिप्शन. *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल* 51(3), पृ.सं. 431–441. 01 जुलाई 2023 की https://doi.org/10.1007/s10643-022-01320-7 से प्राप्त किया गया।

देवी, के. और आर. स्कॉलर. 2022. एकाउंटेबल और इंक्लूसिव एजुकेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू नेशनल एजुकेशन पालिसी (एन.ई.पी.) 2020. *स्पेसिअलुसिस उग्द्यमस* 1(43), आर्टिकल 43.

पल्लाथाड़का, एच., डी. मनोहर्मयुम, एल. पल्लाथाड़का और वी. मक्की 2021. *स्कूल एजुकेशन अकॉर्डिंग टू इंडिया नेशनल* 18 मार्च 2023 को https://doi.org/10.47750/cibg.2021.27.03.038 से प्राप्त किया गया।

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

मर्फी, आर. 2015. अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इन आयरलैंड— चेंज और चैलेंज. *इंटरनेशनल इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन*, 8(2), पृ.सं. 287–300.

मरियम, ए. और सन्नी जोसफ 2022. एन इंटरफेस बिटवीन न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 और अर्ली चाइल्डहुड केयर और एजुकेशन. *ग्लोबल जर्नल ऑफ एप्लाइड इंजीनियरिंग इन कंप्यूटर साइंस और मैथमेटिक्स*. 1(4), पृ.सं. 65–71.

यूनेस्को. 2022. *ग्लोबल पार्टनरशिप स्ट्रेटेजी फॉर अर्ली चाइल्डहुड, 2021–2030.* यूनेस्को उनेस्डोक डिजिटल लाइब्रेरी. 18 मार्च 2023 को https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000380077 से प्राप्त किया गया।

रैकेश, ए. और अन्य 2023. ग्लोबल ट्रैकिंग ऑफ एक्सेस और क्वालिटी इन अर्ली चाइल्डहुड केयर और एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ चाइल्ड केयर और एजुकेशन पॉलिसी* 17(1), पृ. 14. 18 मार्च 2023 को https://doi.org/10.1186/s40723-023-00116-5 से प्राप्त किया गया।

सचदेवा, एस. 2020. *बुक रिव्यु— रंगनाथन नमिता*, अंडरस्टैंडिंग चाइल्डहुड और अडोलस्संस. *इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट*. पृ.सं. 14(3), 545–547. 18 मार्च 2023 को https://doi.org/10.1177/0973703020974454 से प्राप्त किया गया।

सुभाष, पी.डी. 2022. अर्ली चाइल्डहुड प्ले— ए मीडियम फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट, *रिसर्च रिव्यु इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडीसिप्लिनरी*. 7(2), आर्टिकल 2. 18 मार्च 2023 को https://doi.org/10.31305/rrijm.2022.v07.i02.018 से प्राप्त किया गया।

हस्सेब, एम. और एन. मलिक. 2020. *लैंग्वेज एक्वीजीशन इन ई.सी.सी.ई. और एन.ई.पी. 2020.* ए.बी.एस. बुक पेज. पृ.सं. 22–27. 18 मार्च 2023 को https://www.researchgate.net/publication/357702633_Language_Acquisition_in_ECCE_NEP_2020. से प्राप्त किया गया।